आटे का मुर्गा

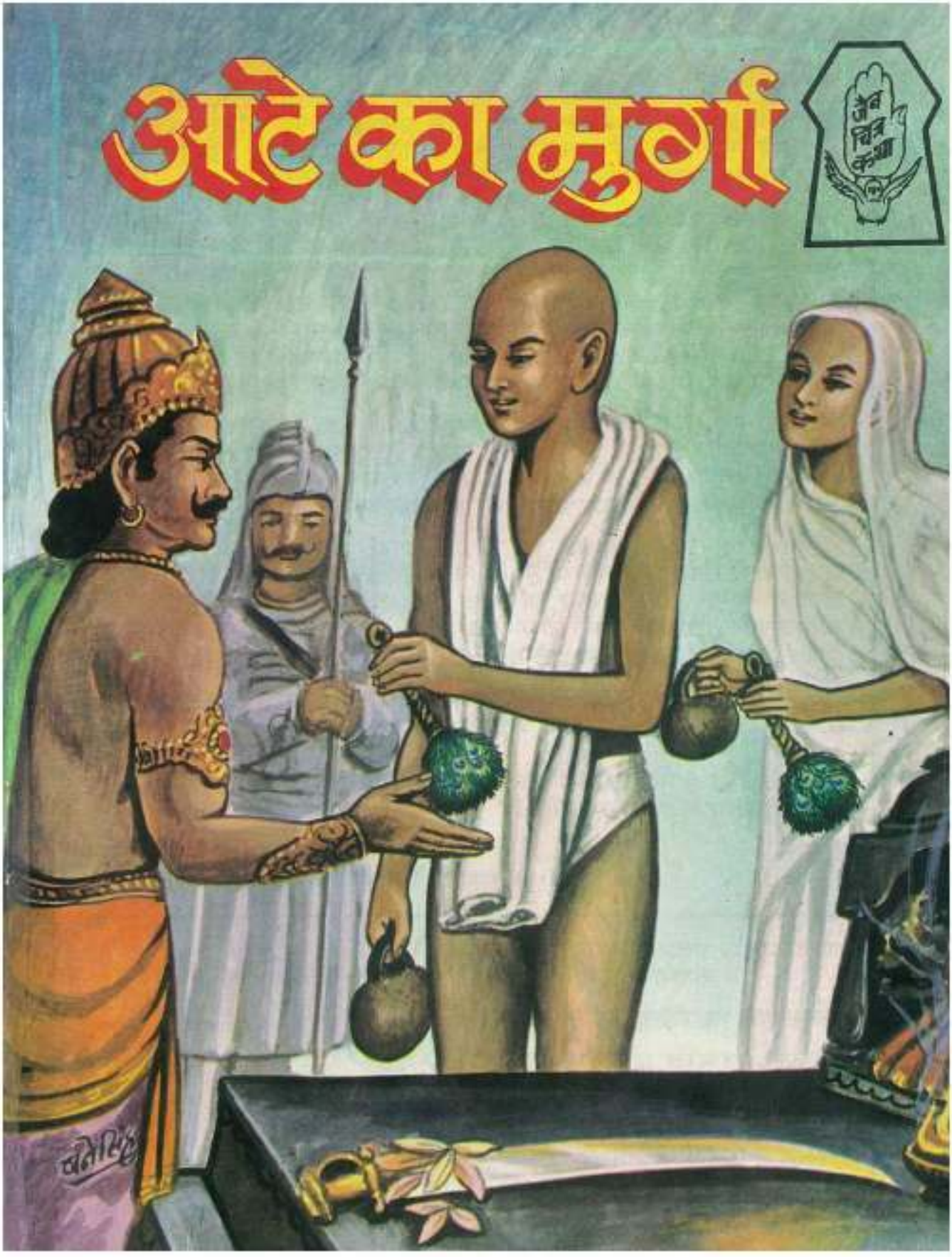

सम्पादकीय

जैनचित्र कथा आप के बच्चे को जैन संस्कृति से परिचित कराती है। इस पुस्तक की कथा दिगम्बराचार्य सोमदेव सूरि द्वारा यशस्तिलक चम्पू महाकाव्य संस्कृत पर आधारित है।

भारत अध्यात्म की उर्वर भूमि है। यहां के कण-कण में आत्म-निर्भर का मधुर संगीत है, तत्व दर्शन का रस है धर्म का अंकुरण. यहां की मिट्टी ने ऐसे नररत्नों को प्रसव दिया है जो अध्यात्म के मूर्त रूप थे। उनके उर्ध्वमुखी चिन्तन ने जीवन को समझने का विशाद दृष्टिकोण दिया। भोग में त्याग की बात कही और कमल दल की भांति निर्लेप जीवन जीने की कला सिखाई। जैन शासन की श्री वृद्धि में उनका अनुदान अनुपम है वे त्याग तपस्या के उत्कृष्ट उदाहरण हैं।

आज की नई पीढी विशेषकर नये नये आकर्षक साहित्य की ओर रुचिवान है। कहानी का अपना मूल्य है, उसका मूल्य इसलिए नहीं होता कि वह घटना है या कल्पना है किन्तु उसका मूल्य इसलिए होता है कि वह जीवन्त सत्य को अभिव्यक्त करती है।

अहिंसा जैन सिद्धान्त का प्रमुख प्रतिपाद्य विषय है, इस कथा में में भी यही सिद्ध किया गया है कि राजा यशोधर ने अपनी माता के उपदेश से प्रभावित होकर अम्बिका देवी के लिए चूर्ण निर्मित मुर्गे का बलिदान किया था उसी पाप से उन्हें माता के साथ ही सात भवों में अनेक दुःख सहन करने पड़े।

जैनाचार्यों और मुनियों ने मानव को हिंसक पशुवृत्ति से ऊपर उठ कर मानवता की दयामयी मणिशिला पर प्रतिष्ठित किया है

हमें विश्वास है कि जीवन को रोशनी देने वाली इन कथाओं को व्यापक रूप में पढा जायेगा।

धर्मचंद शास्त्री
(आचार्य धर्मसागर जी संघस्थ)

प्रकाशक: आचार्य धर्मश्रुत ग्रन्थ माला
गोधा सदन अलसीसर हाउस, संसारचंद्र रोड़ जयपुर

सम्पादक: धर्मचंद शास्त्री

लेखक : मुनि अमितसागर जी

चित्रकार: बनेसिंह जयपुर

मुद्रक :- सैनानी ऑफसैट
फोन : 2282885, निवास 2272796

मूल्य 112/

आटे का मुर्गा

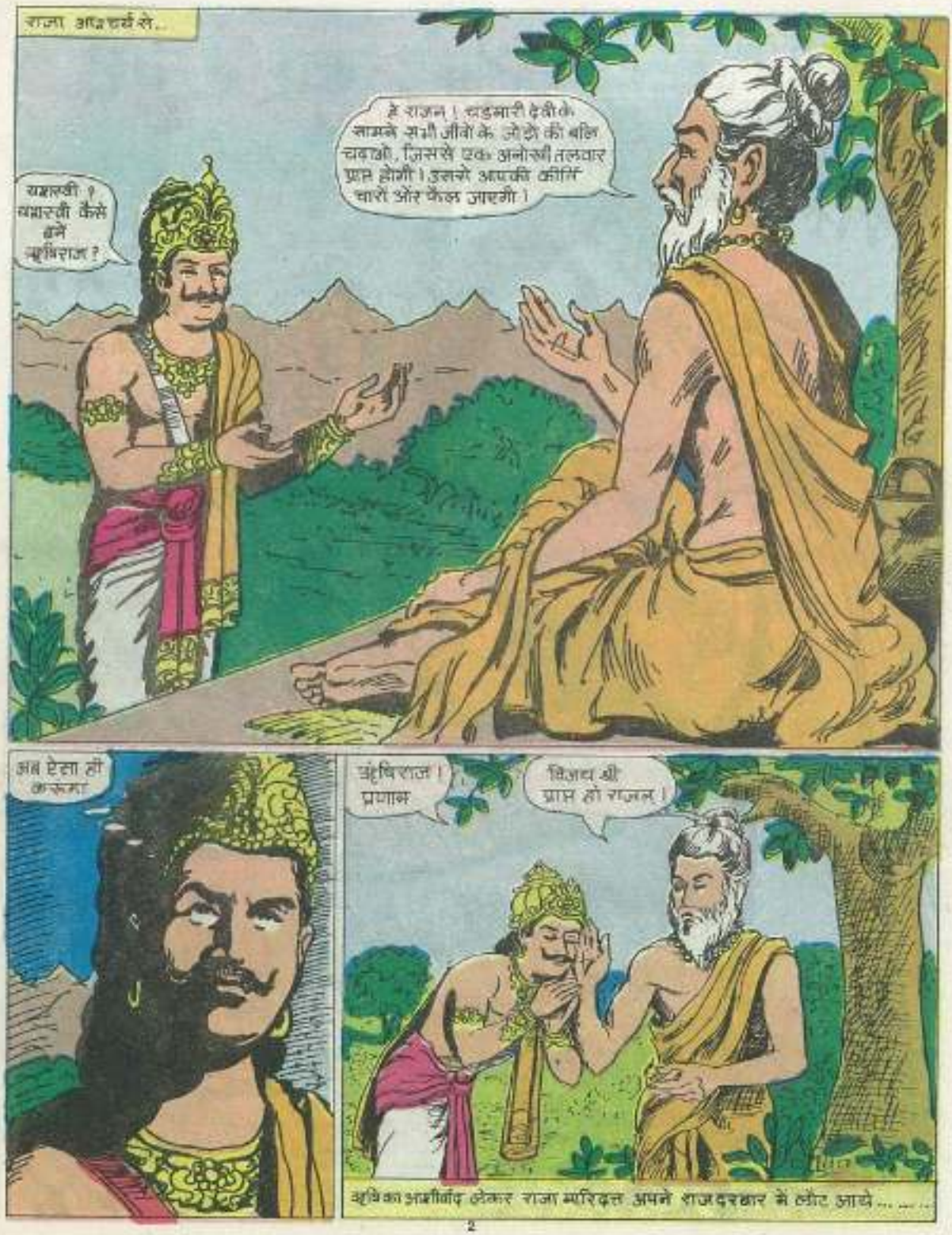
राजा आश्चर्य से..
यशस्वी ? यशस्वी कैसे बने ऋषिराज ?
हे राजन ! चंडमारी देवी के सामने सभी जीवों के जोड़े की बलि चढ़ाओ, जिससे एक अनोखी तलवार प्राप्त होगी। उससे आपकी कीर्ति चारों ओर फैल जाएगी।
अब ऐसा ही करूंगा
ऋषिराज ! प्रणाम
विजय श्री प्राप्त हो राजन !
ऋषि का आशीर्वाद लेकर राजा मरिदत्त अपने राजदरबार में लौट आये.....

राजा सारिवृत्त चण्डमारी देवी के मंदिर के सन्मुख समस्त राजाओं, मंत्रियों एवं प्रजाजनों सहित पहुंचे, जहां सभी जीवों के जोड़े बलि के लिए लाये गये हैं। लेकिन मनुष्य का जोड़ा..... सभी चिन्तित हैं.....

दिगम्बर जैनाचार्य श्री ... जी महाराज चतुर्विध संघ सहित विहार करते हुए राजपुर की ओर बढ़ रहे हैं।
अरे! देखो जिसे मानव जीवित अवस्था में कितना स्नेह करता है, मर जाने पर उसकी क्या दशा होती है!
श्मशान की गंदगी के कारण स्वाध्याय आदि क्रियायें वर्जित हैं। अतः अन्यत्र विहार करनी चाहिए.. यह सोचकर
हां ठीक है पर्वत, वहीं चलकर ठहरना चाहिए!
खम्मामि सव्व जीवाणं सव्वे जीवा खमंतु मे। मित्ती मे सव्वभूएसु, वैरं मज्झं न केणवि....
आचार्य श्री अवधिज्ञानी थे अतः...

आज चैत्र शुक्ला नवमी को हिंसा दिवस है ऐसा अवधिज्ञान से जान कर आचार्य श्री ने उपवास किया और शिष्यों को आहार ग्रहण करने का आदेश दिया।

शिष्यों! राजपुर नगर के निकटवर्ती ग्रामों में आहार ग्रहण कर आओ।

जो आज्ञा गुरुदेव!

सब चलने को तैयार है पर...

आज हिंसा का ताण्डव नृत्य अभयरुचि क्षुल्लक एवं अभयमती क्षुल्लिका द्वारा बंद होगा ऐसा अवधिज्ञान से जान कर आचार्य श्री ने दोनों को बुलाया।

आज आप दोनों राजपुर नगर में ही आहार ग्रहण करने जाओगे

जो आज्ञा गुरुदेव!

दोनों श्मशान थे। पूर्वावस्था में दोनों भाई बहिन थे परन्तु जाति स्मरण से क्षुल्लक-क्षुल्लिका दीक्षा ग्रहण कर ली थी।

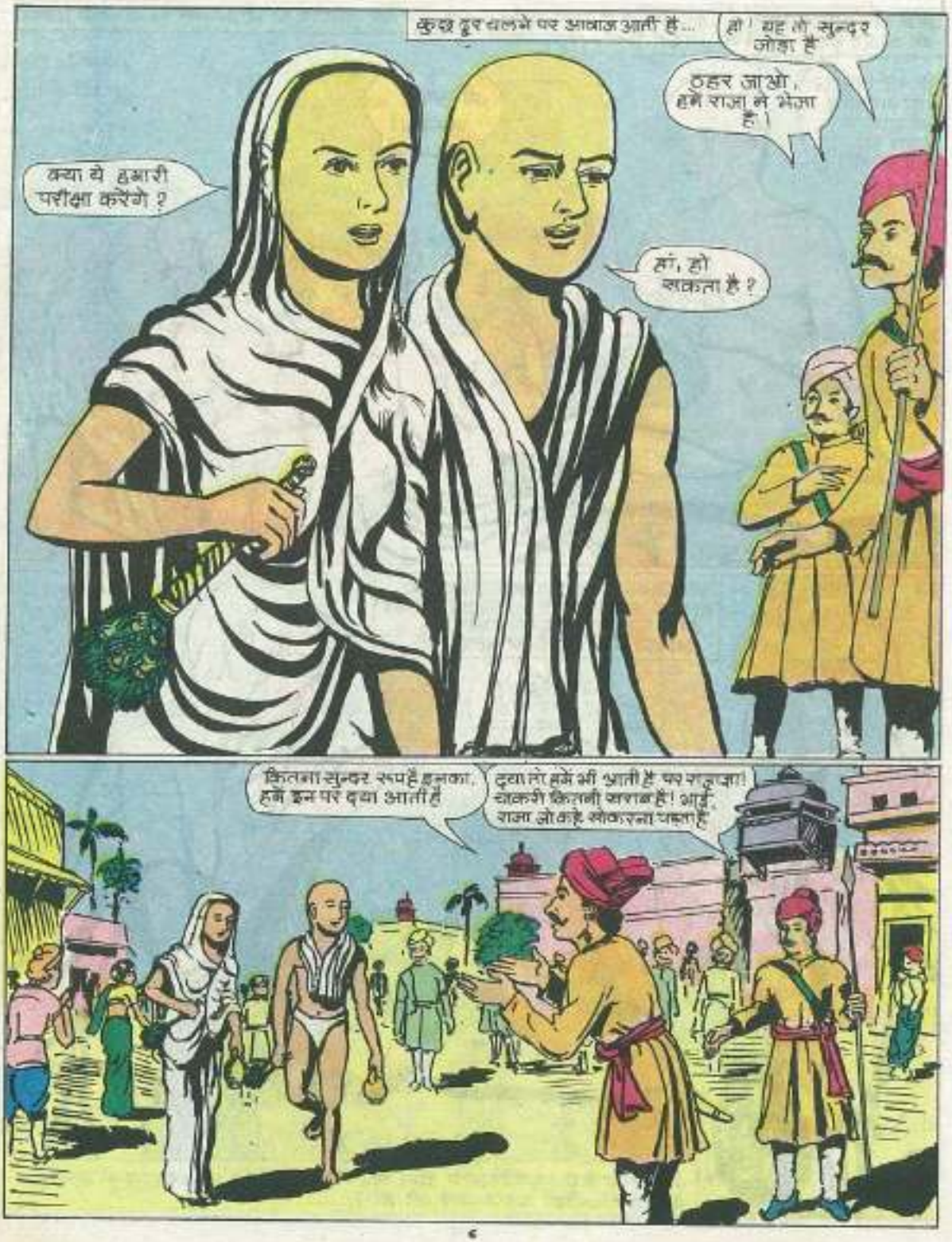
कुछ दूर चलने पर आवाज आती है...
हो! यह तो सुन्दर जोड़ा है
ठहर जाओ, हमें राजा ने भेजा है।
क्या ये हमारी परीक्षा करेंगे?
हां, हो सकता है?
कितना सुन्दर रूप है इनका, हमें इन पर दया आती है
दया तो हमें भी आती है पर राजाज्ञा! चाकरी कितनी खराब है! आई, राजा जो कहे स्वीकारना पड़ता है

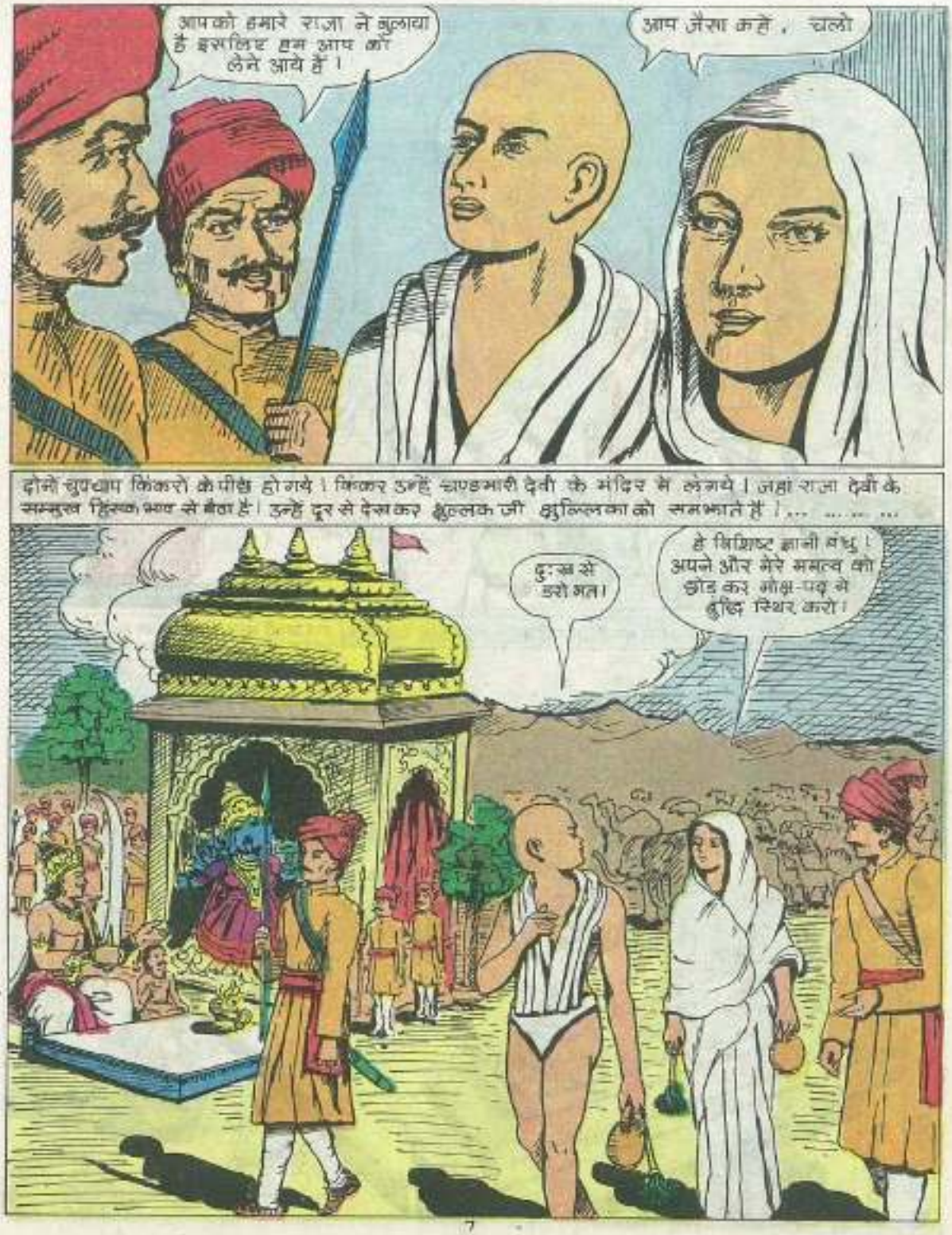
आपको हमारे राजा ने बुलाया है इसलिए हम आप को लेने आये हैं।
आप जैसा कहें, चलो
दोनों चुपचाप किंकरों के पीछे हो गये। किंकर उन्हें चण्डभारी देवी के मंदिर में लेगये। जहां राजा देवी के सम्मुख हिंसक भाव से बैठा है। उन्हें दूर से देखकर क्षुल्लक जी क्षुल्लिका को समझाते हैं।... ... ...
दुःख से डरो मत।
हे विशिष्ट ज्ञानी बंधु! अपने और मेरे ममत्व को छोड़ कर मोक्ष-पद में बुद्धि स्थिर करो।

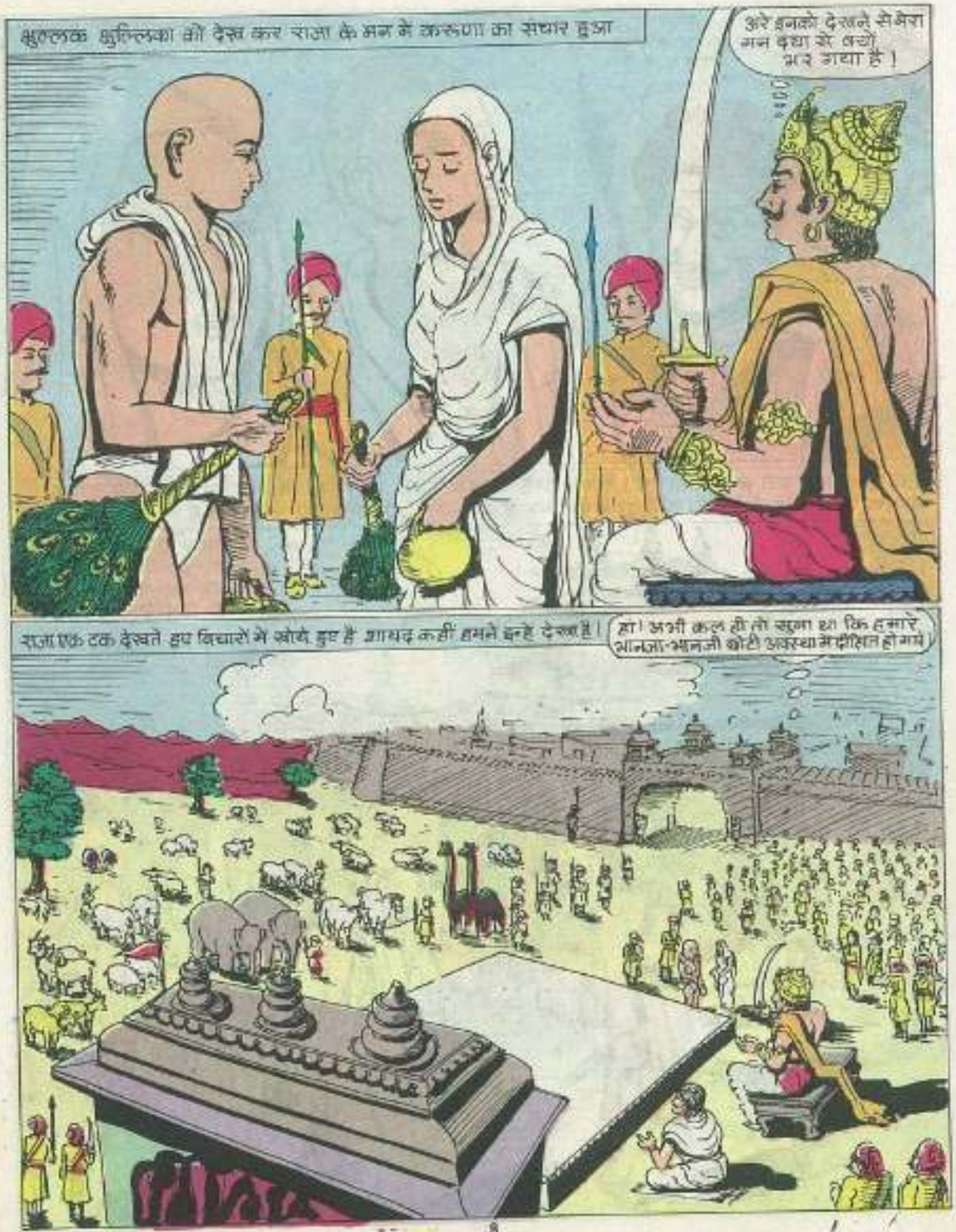
क्षुल्लक क्षुल्लिका को देख कर राजा के मन में करुणा का संचार हुआ
अरे इनको देखने से मेरा मन दया से क्यों भर गया है !
राजा एक टक देखते हुए विचारों में खोये हुए हैं शायद कहीं हमने इन्हें देखा है !
हां ! अभी कल ही तो सुना था कि हमारे भानजा-भानजी छोटी अवस्था में दीक्षित हो गये

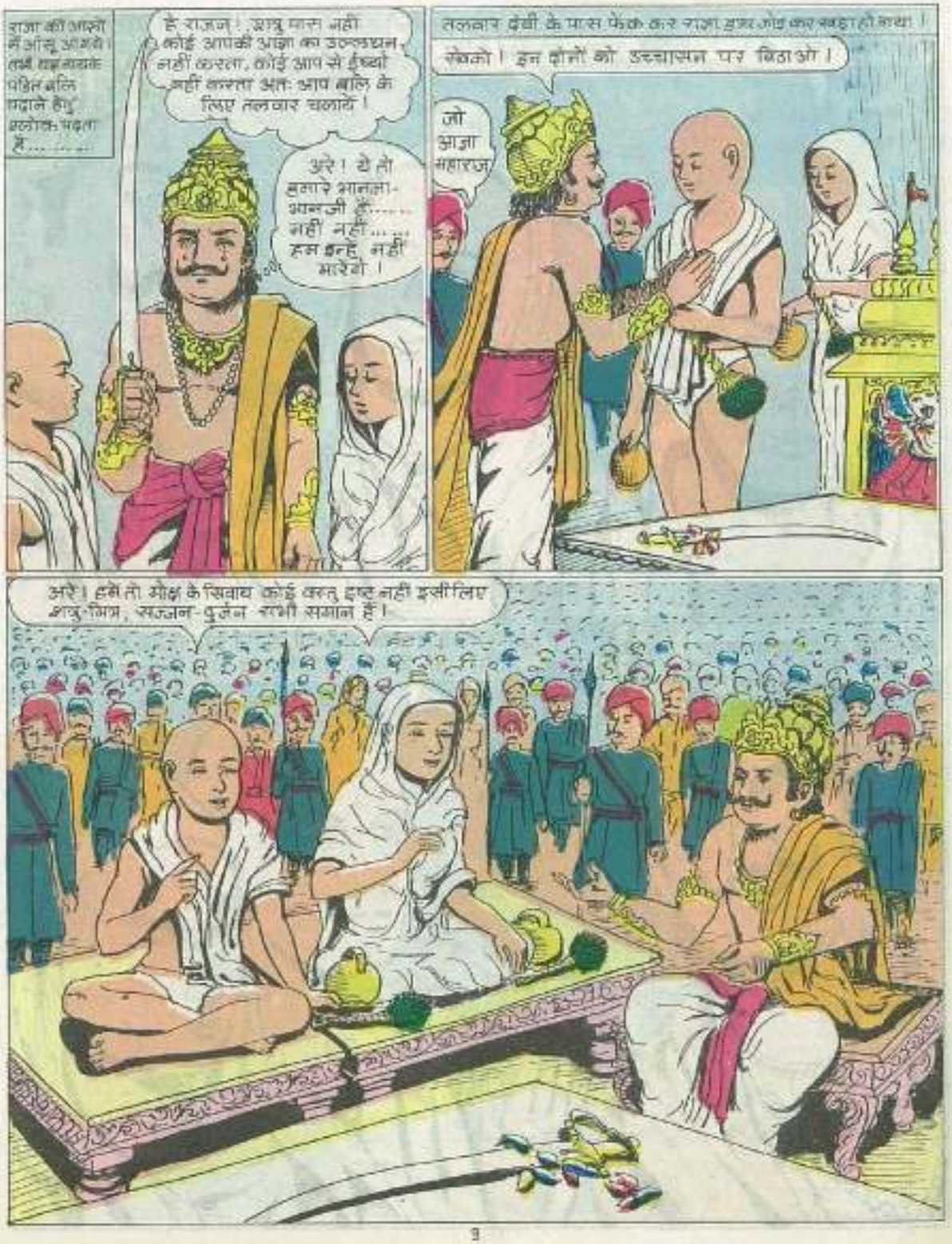

राजा की आँखों में आँसू आ गये। तभी पंडित बलि चढ़ाने हेतु श्लोक पढ़ता है......
हे राजन! शत्रु मारा नहीं कोई आपकी आज्ञा का उल्लंघन नहीं करता, कोई आप से ईर्ष्या नहीं करता अतः आप बलि के लिए तलवार चलायें।
अरे! ये तो हमारे भानजा-भानजी हैं...... नहीं नहीं...... हम इन्हें नहीं मारेंगे।
तलवार देवी के पास फेंक कर राजा हाथ जोड़ कर खड़ा हो गया।
सेवको! इन दोनों को उच्चासन पर बिठाओ।
जो आज्ञा महाराज
अरे! हमें तो मोक्ष के सिवाय कोई वस्तु इष्ट नहीं इसीलिए शत्रु-मित्र, सज्जन-दुर्जन सभी समान हैं।

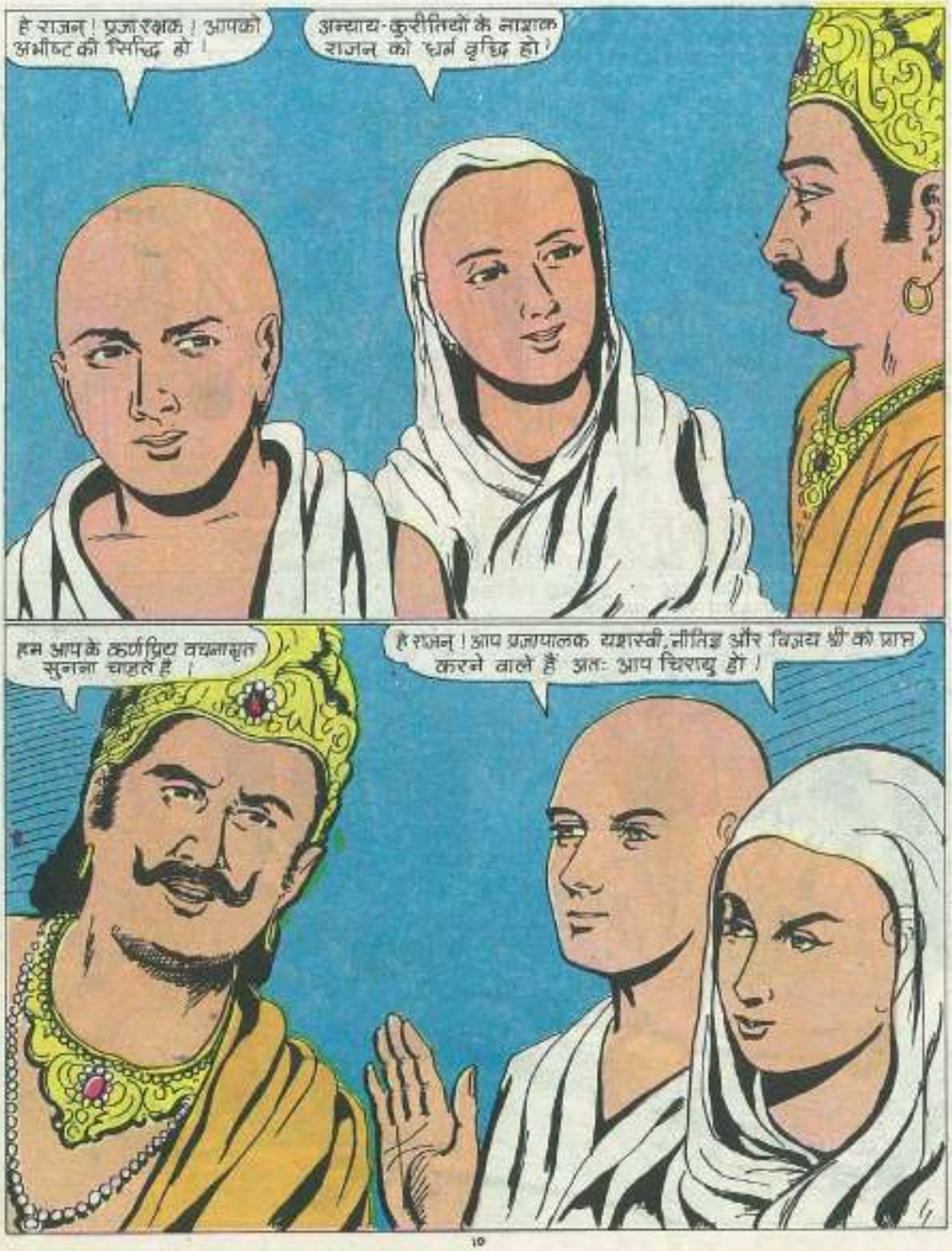
हे राजन् ! प्रजा रक्षक ! आपको अभीष्ट की सिद्धि हो !
अन्याय-कुरीतियों के नाशक राजन् को धर्म वृद्धि हो !
हम आप के कर्णप्रिय वचनामृत सुनना चाहते हैं !
हे राजन् ! आप प्रजापालक यशस्वी, नीतिज्ञ और विजय श्री को प्राप्त करने वाले हैं अतः आप चिरायु हो !

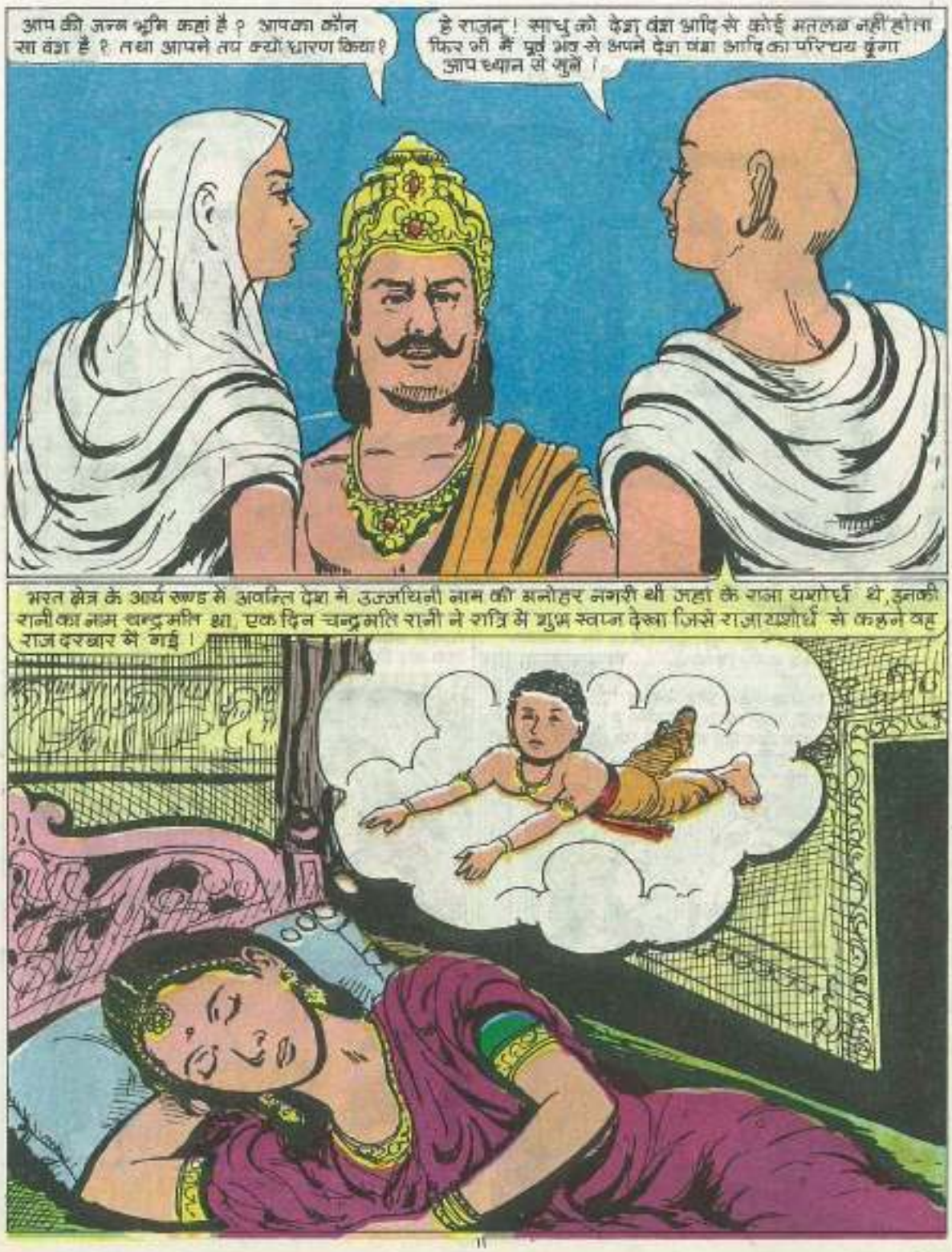
आप की जन्म भूमि कहां है ? आपका कौन सा वंश है ? तथा आपने तप क्यों धारण किया ?
हे राजन् ! साधु को देश वंश आदि से कोई मतलब नहीं होता फिर भी मैं पूर्व भव से अपने देश वंश आदि का परिचय दूंगा आप ध्यान से सुनें ।
भरत क्षेत्र के आर्य खण्ड में अवन्ति देश में उज्जयिनी नाम की मनोहर नगरी थी जहां के राजा यशोधर्म थे, इनकी रानी का नाम चन्द्रमति था, एक दिन चन्द्रमति रानी ने रात्रि में शुभ स्वप्न देखा जिसे राजा यशोधर्म से कहने वह राज दरबार में गई ।

यशोर्ध का दरबार...
हे पति देव! आज मैंने पिछली रात्रि में स्वर्ग से आता हुआ एक विद्वान पुत्र देखा जो सर्वगुण सम्पन्न है!
हे देवी! तेरा पुत्र भाग्यशाली प्रतापी एवं विजय श्री को प्राप्त करने वाला होगा!
नौ माह बाद रानी चन्द्रमती ने एक पुत्र को जन्म दिया जिसका नाम यशोधर रखा गया और धीरे धीरे पुत्र बड़ा हुआ... ... ...
एक दिन राजा यशोर्ध दर्पण में मुख देख रहा था कि अचानक सिर पर एक सफेद बाल दिखा... ...
अरे! संसार में कितना समय भोगविलास में बीत गया अब मृत्यु रूपी काल आने वाला है जिसकी सूचना बुढ़ापे के सफेद बाल दे रहे हैं अतः दीक्षा लेनी चाहिए!
राजा ने अपने पुत्र यशोधर का विवाह अमृतमती कन्या के साथ कर दिया एवं राज्य का भार पुत्र को सौंप कर कहा...
हे पुत्र! धर्म, राज्य एवं प्रजा की रक्षा करते हुए राज्य करना!
जो आज्ञा पिताजी!
राजा यशोर्ध ने वन में जाकर दिगम्बर दीक्षा ग्रहण करली... ... ...

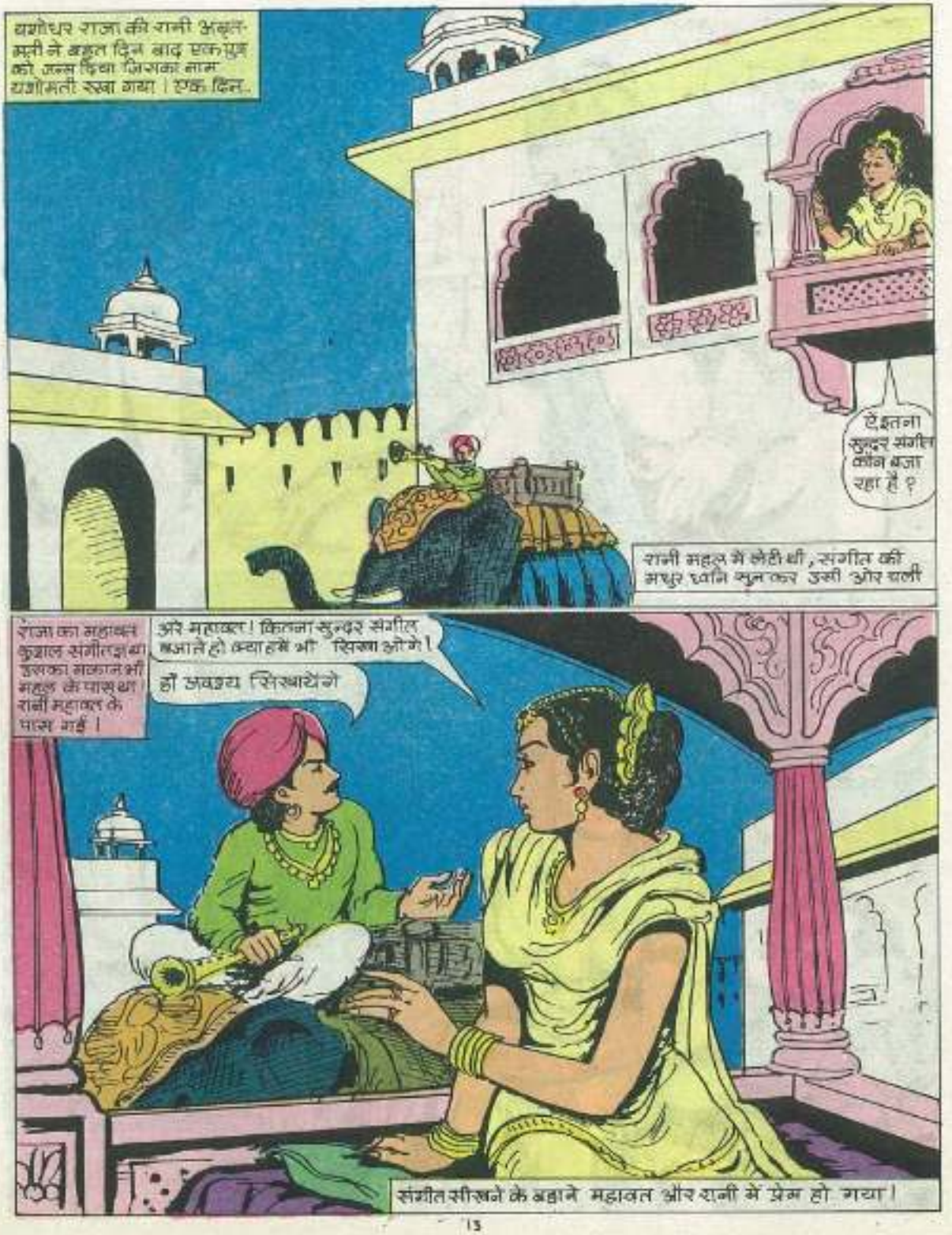

यशोधर राजा की रानी अमृतमती ने बहुत दिन बाद एक पुत्र को जन्म दिया जिसका नाम यशोमती रखा गया । एक दिन
ऐं इतना सुन्दर संगीत कौन बजा रहा है ?
रानी महल में लेटी थी, संगीत की मधुर ध्वनि सुन कर उसी ओर चली
राजा का महावत कुशल संगीतज्ञ था उसका मकान भी महल के पास था रानी महावत के पास गई ।
अरे महावत ! कितना सुन्दर संगीत बजाते हो क्या हमें भी सिखाओगे ।
हाँ अवश्य सिखायेंगे
संगीत सीखने के बहाने महावत और रानी में प्रेम हो गया ।

एक दिन राजा को सन्देह हो गया।
अरे! मेरी रानी मुझसे प्रेम कम क्यों करती है? पता लगाना होगा।
एक रात राजा-रानी विश्राम कर रहे थे। रानी ने राजा को सोया हुआ जान कर महावत के पास जाने का विचार किया।
हाँ, अब राजा गहरी निद्रा में सो गये, चलो अब चलें।
देखूँ, आज क्या होता है। खों... खों.... खों...
रानी उठकर महावत के घर की ओर चली राजा भी तलवार लेकर पीछे पीछे चला... ... ...

क्या ?
दोनों का काम तमाम कर दूं ? नहीं ! जब यह स्त्री मेरी नहीं तब यह राज्य वैभव कैसे मेरा हो सकता है ? अब तो दीक्षा ग्रहण करना ही अच्छा है !
राजा लौट आया। किसी को मालूम नहीं पड़ा। प्रातः राजा चन्द्रमती के पास गये।
माताजी ! प्रणाम !
बेटा, चिरंजीवी हो !

बेटा ! आज तू उदास क्यों है ?
माता जी ! आज मैंने रात्रि में अशुभ स्वप्न देखा है !
बेटा ! शहर के बाहर देवी के मंदिर में बकरे की बलि देने से अशुभ स्वप्न का फल नष्ट हो जायेगा !
अरे मां ! बकरे को मारना कितना पाप है ! हमारे ही समान उसके माता पिता हैं ! नहीं , निरापराध जीव को हम नहीं मारेंगे !

बेटा ! अगर तुझे बकरे से प्रेम है तो आटे का बना मुर्गा बलि में चढ़ा दो।
आटे के मुर्गे की बलि देने से संकल्पी हिंसा होगी पर माँ की आज्ञा कैसे करूं।
माँ की आज्ञा मानना हमारा परम कर्त्तव्य है ।
बेटा ! निराश मत हो, सब ठीक होगा।
जो आज्ञा माता जी !

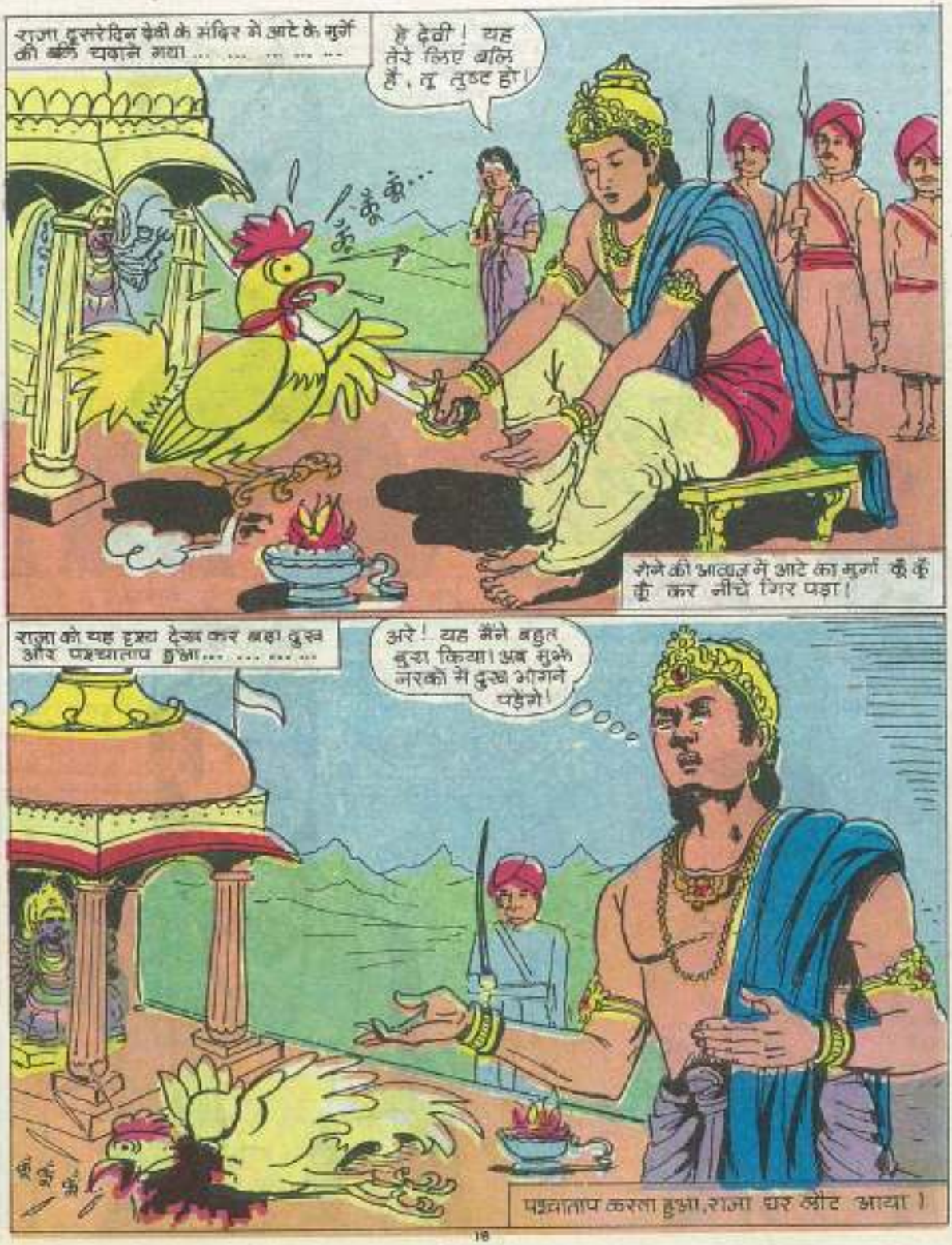

राजा दूसरे दिन देवी के मंदिर में आटे के मुर्गे की बलि चढ़ाने गया... ... ...
हे देवी ! यह तेरे लिए बलि है, तू तुष्ट हो !
रोने की आवाज में आटे का मुर्गा कुँ कुँ कुँ कर नीचे गिर पड़ा।
राजा को यह दृश्य देख कर बड़ा दुख और पश्चाताप हुआ... ... ...
अरे ! यह मैंने बहुत बुरा किया। अब मुझे नरकों में दुख भोगने पड़ेंगे !
पश्चाताप करता हुआ, राजा घर लौट आया।

राजा संसार से उदास होकर अपने पुत्र यशोमती को राज्य देकर दीक्षा ग्रहण करने की योजना बनाने लगा। उसकी रानी अमृतमती को दीक्षा लेने का समाचार मिला। रानी ने सोचा हमारे कुकृत्यों का पता राजा को लग गया, अतः इन्हें गुप्त रूप से मार देना चाहिए।
रानी अमृतमती से...
हे राजन! मैं आप के बिना कैसे जीवित रहूँगी
कुछ भी हो मैं तो दीक्षा लेने का निर्णय कर चुका हूँ।
हे नाथ! दीक्षा लेने से पहले आप मेरे हाथ का भोजन अवश्य कर लें, फिर मैं भी आपके साथ दीक्षा लेलूँगी
हाँ, अवश्य कर लूँगा।
कुछ विचार कर
हाँ, अच्छा रहेगा। भोजन में विष; किसी को मालूम भी नहीं पड़ेगा।

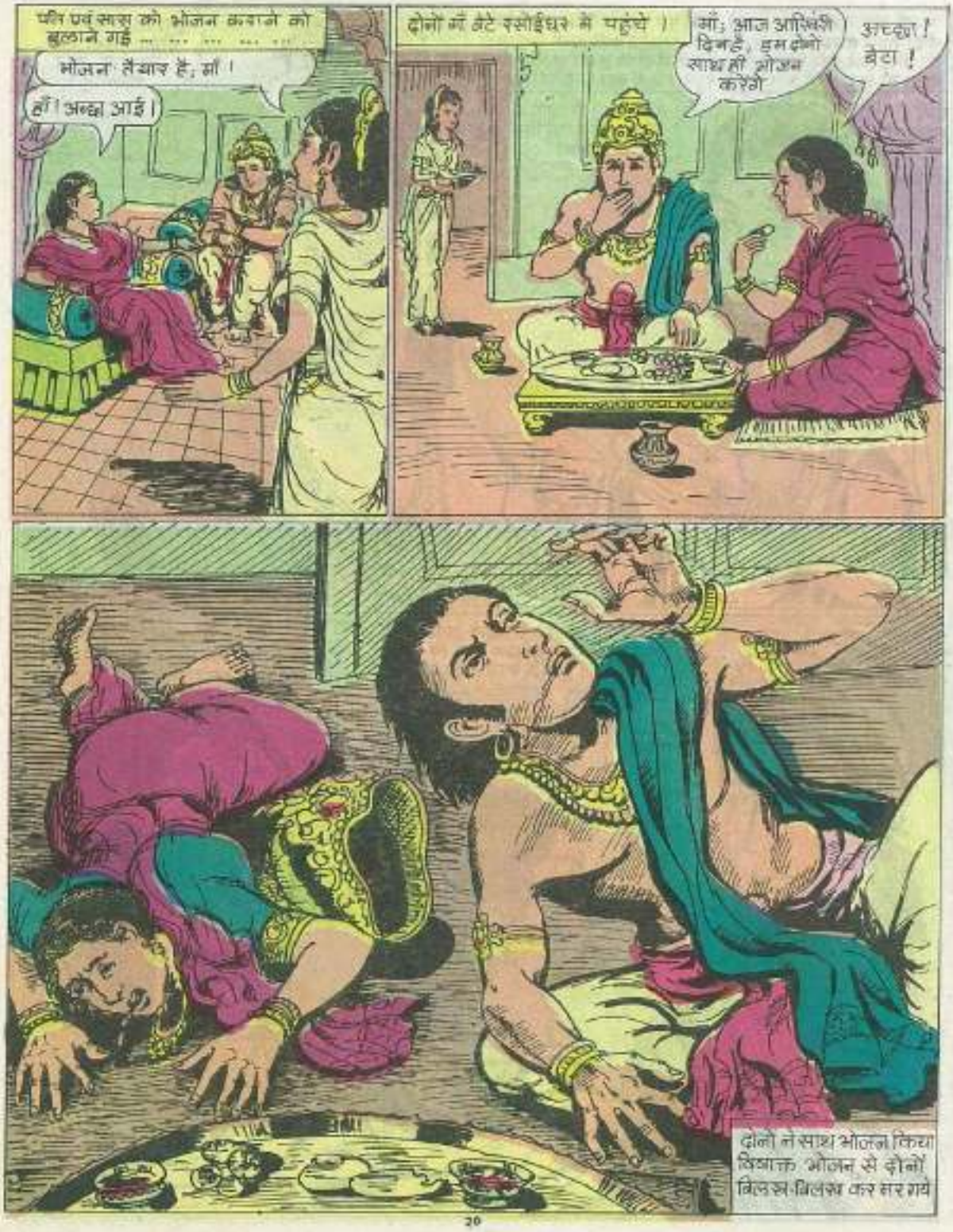
पति एवं सास को भोजन कराने को बुलाने गई ... ...
भोजन तैयार है, माँ !
हाँ ! अच्छा आई।
दोनों माँ बेटे रसोईघर में पहुंचे।
माँ, आज आखिरी दिन है, हम दोनों साथ ही भोजन करेंगे
अच्छा ! बेटा !
दोनों ने साथ भोजन किया विषाक्त भोजन से दोनों बिलख-बिलख कर मर गये

रानी मायाचारी से चिल्लाई ! आवाज सुन कर सेवक आगये।
हाय ! यह क्या हुआ ? हाय ! यह कैसे हुआ ? हाय ! अब मैं क्या करूं ?

दोनों मां बेटे ने चाण्डाल के यहां मुर्गे के रूप में जन्म लिया।

चाण्डाल मुर्गों को लेकर उद्यान में घूमने गया। वहां एक मुनिराज ध्यान मग्न थे...
अरे! ये मुनिराज ध्यान में क्या करते हैं ? वहां चल कर पूछें!

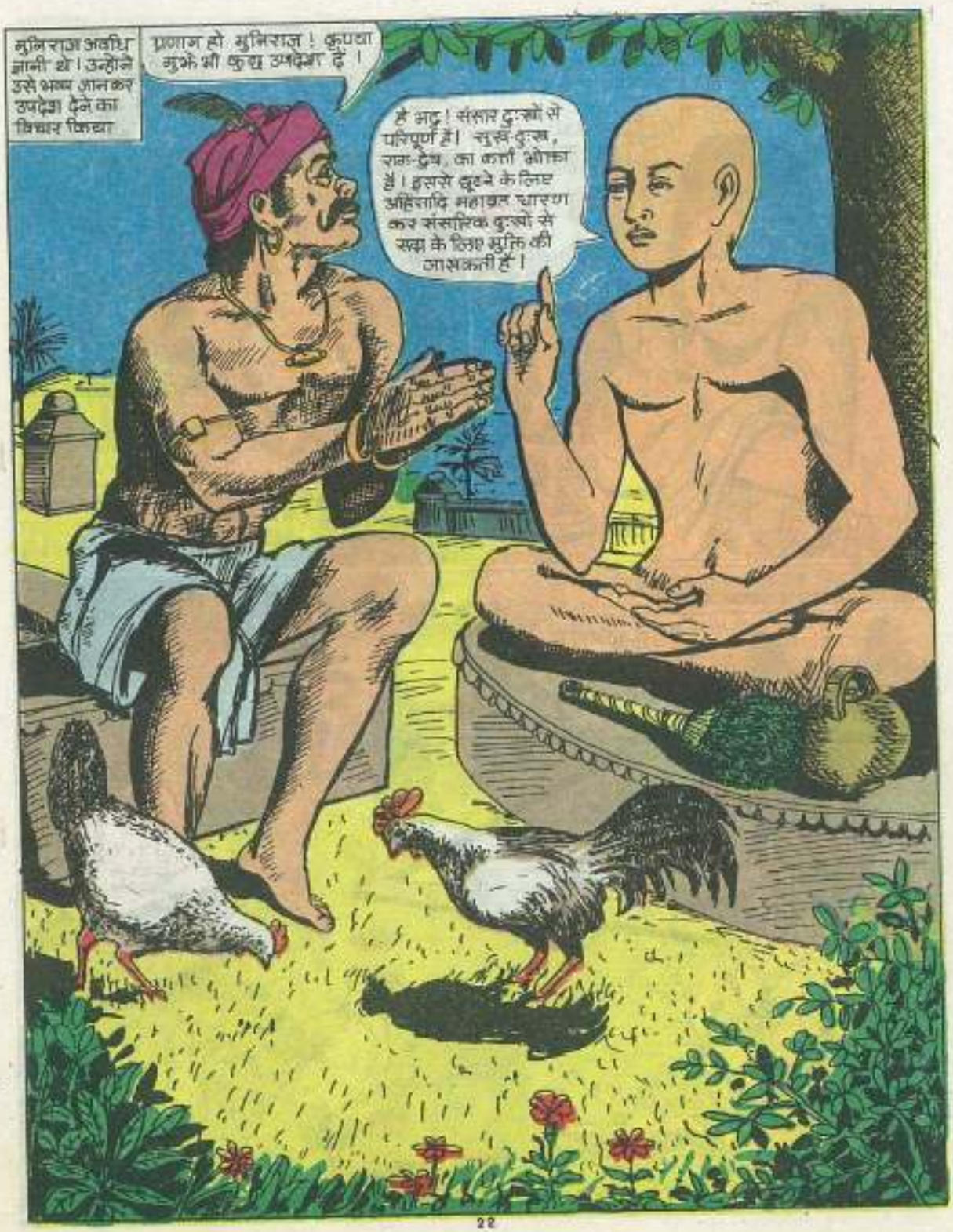
मुनिराज अवधि ज्ञानी थे। उन्होंने उसे भव्य जानकर उपदेश देने का विचार किया
प्रणाम हो मुनिराज! कृपया मुझे भी कुछ उपदेश दें।
हे भद्र! संसार दुःखों से परिपूर्ण है। सुख-दुःख, राग-द्वेष, का कर्ता भोक्ता है। इससे छूटने के लिए अहिंसादि महाव्रत धारण कर सांसारिक दुःखों से सदा के लिए मुक्ति की जा सकती है।

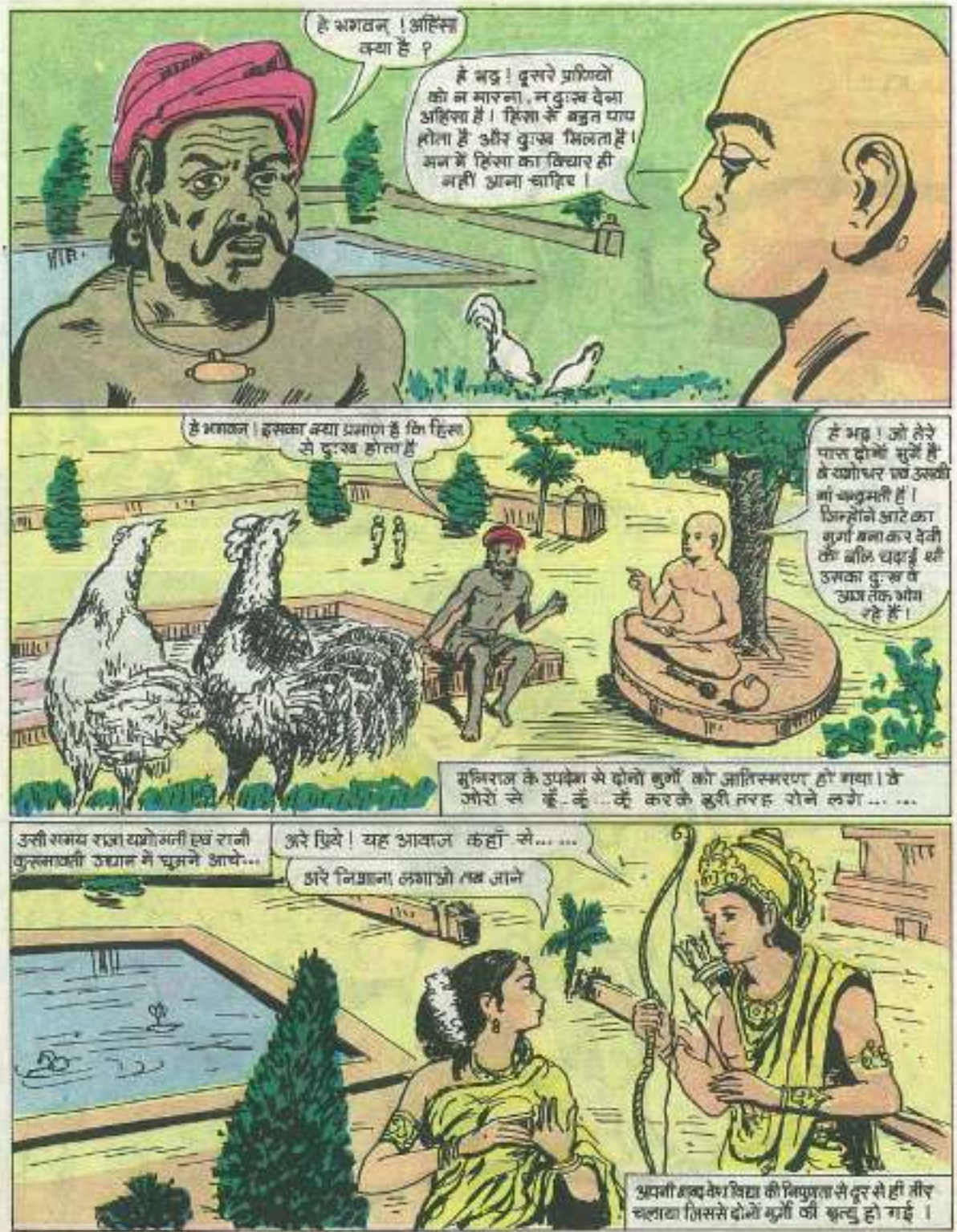

हे भगवन ! अहिंसा क्या है ?
हे भद्र ! दूसरे प्राणियों को न मारना, न दुःख देना अहिंसा है। हिंसा में बहुत पाप होता है और दुःख मिलता है। मन में हिंसा का विचार ही नहीं आना चाहिए।
हे भगवन ! इसका क्या प्रमाण है कि हिंसा से दुःख होता है
हे भद्र ! जो तेरे पास दोनों मुर्गे हैं वे यशोधर एवं उसकी माँ चन्द्रमती हैं ! जिन्होंने आटे का मुर्गा बनाकर देवी की बलि चढ़ाई थी उसका दुःख वे आज तक भोग रहे हैं।
मुनिराज के उपदेश से दोनों मुर्गों को जातिस्मरण हो गया। वे जोरों से कुँ-कुँ...कुँ करके बुरी तरह रोने लगे......
उसी समय राजा यशोमती एवं रानी कुसुमावली उद्यान में घूमने आये...
अरे प्रिये ! यह आवाज कहाँ से......
अरे निशाना लगाओ तब जाने
अपनी शब्दभेदी विद्या की निपुणता से दूर से ही तीर चलाया जिससे दोनों मुर्गों की मृत्यु हो गई।

कहो प्रिये कैसा रहा निशाना !
हां ठीक है, बिल्कुल ठीक ....
राजा यशोमती एवं कुसमावती अपने महलों में चले गये ।

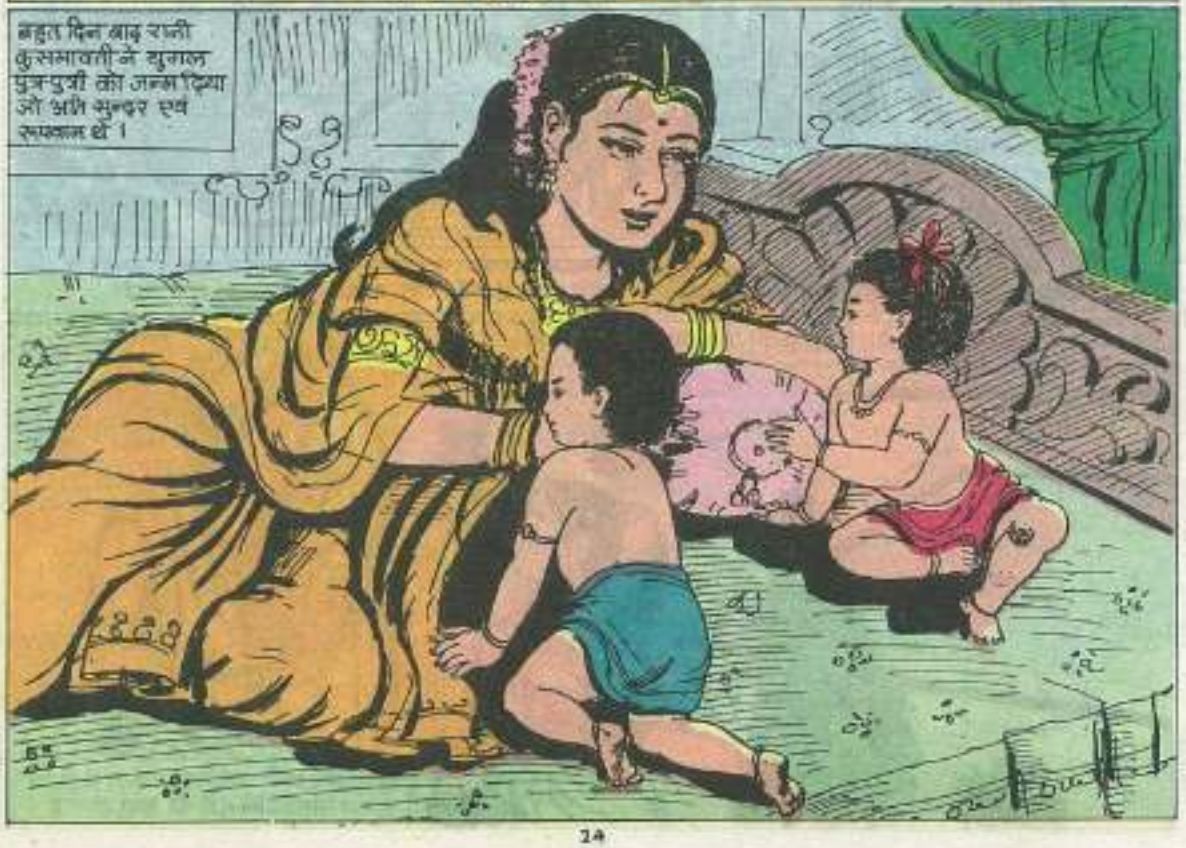

बहुत दिन बाद रानी कुसमावती ने युगल पुत्र-पुत्री को जन्म दिया जो अति सुन्दर एवं रूपवान थे ।

वर्षों का समय बीत गया। सभी सुख से जीवन व्यतीत कर रहे थे।

एक दिन राजा यशोमती के उद्यान में अवधिज्ञानी मुनिराज के दर्शन हुए।
नमोस्तु, भगवन्।
धर्म वृद्धि हो राजन्!

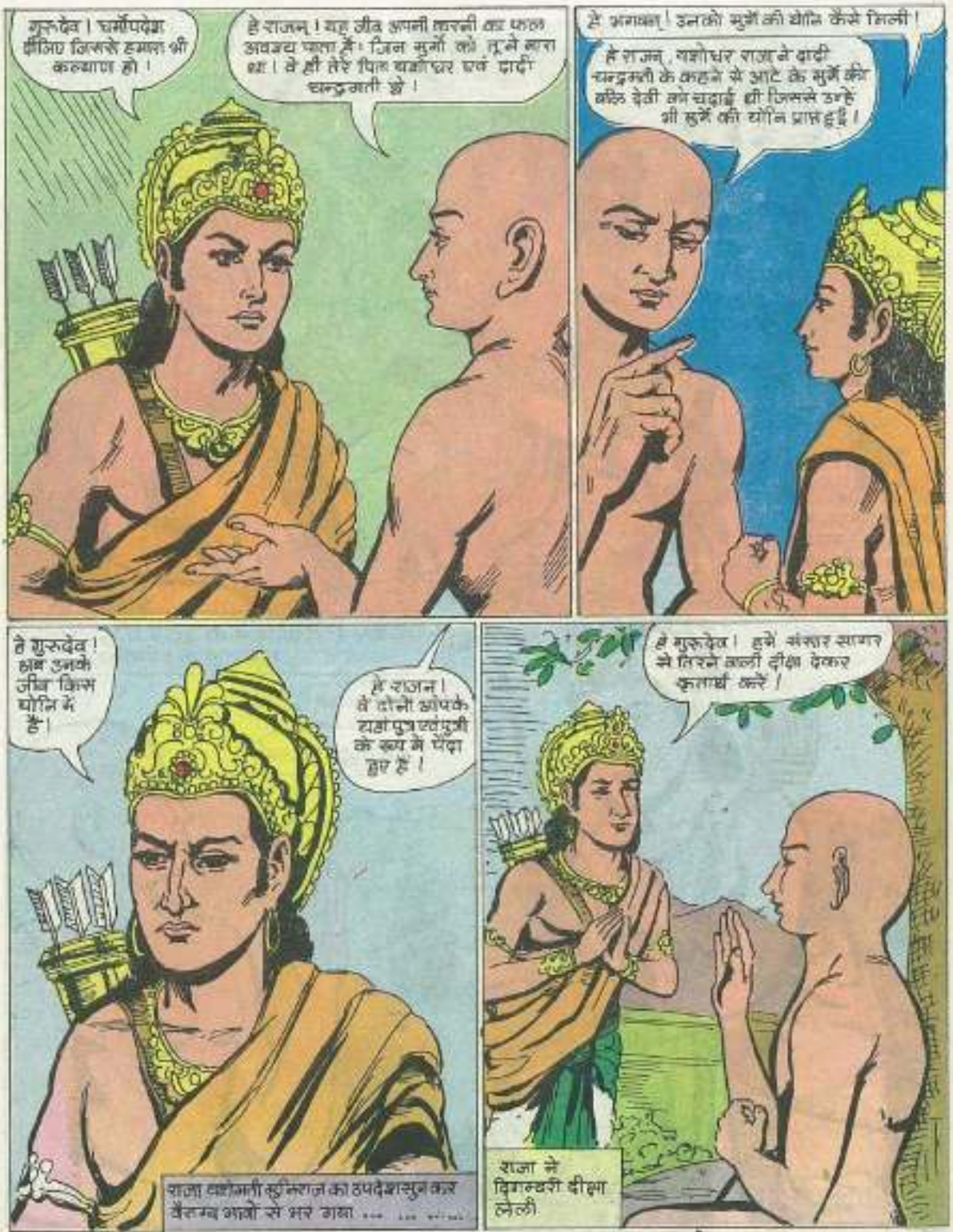
गुरुदेव ! धर्मोपदेश दीजिए जिससे हमारा भी कल्याण हो !
हे राजन् ! यह जीव अपनी करनी का फल अवश्य पाता है। जिन मुर्गों को तूने मारा था ! वे ही तेरे पिता यशोधर एवं दादी चन्द्रमती थे !
हे भगवन् ! उनको मुर्गे की योनि कैसे मिली !
हे राजन् यशोधर राजा ने दादी चन्द्रमती के कहने से आटे के मुर्गे की बलि देवी को चढ़ाई थी जिससे उन्हें भी मुर्गे की योनि प्राप्त हुई !
हे गुरुदेव ! अब उनके जीव किस योनि में हैं !
हे राजन ! वे दोनों आपके राजा पुत्र एवं पुत्री के रूप में पैदा हुए हैं !
राजा यशोमती मुनिराज का उपदेश सुन कर वैराग्य भावों से भर गया ...
हे गुरुदेव ! हमें संसार सागर से तिरने वाली दीक्षा देकर कृतार्थ करें !
राजा ने दिगम्बरी दीक्षा लेली

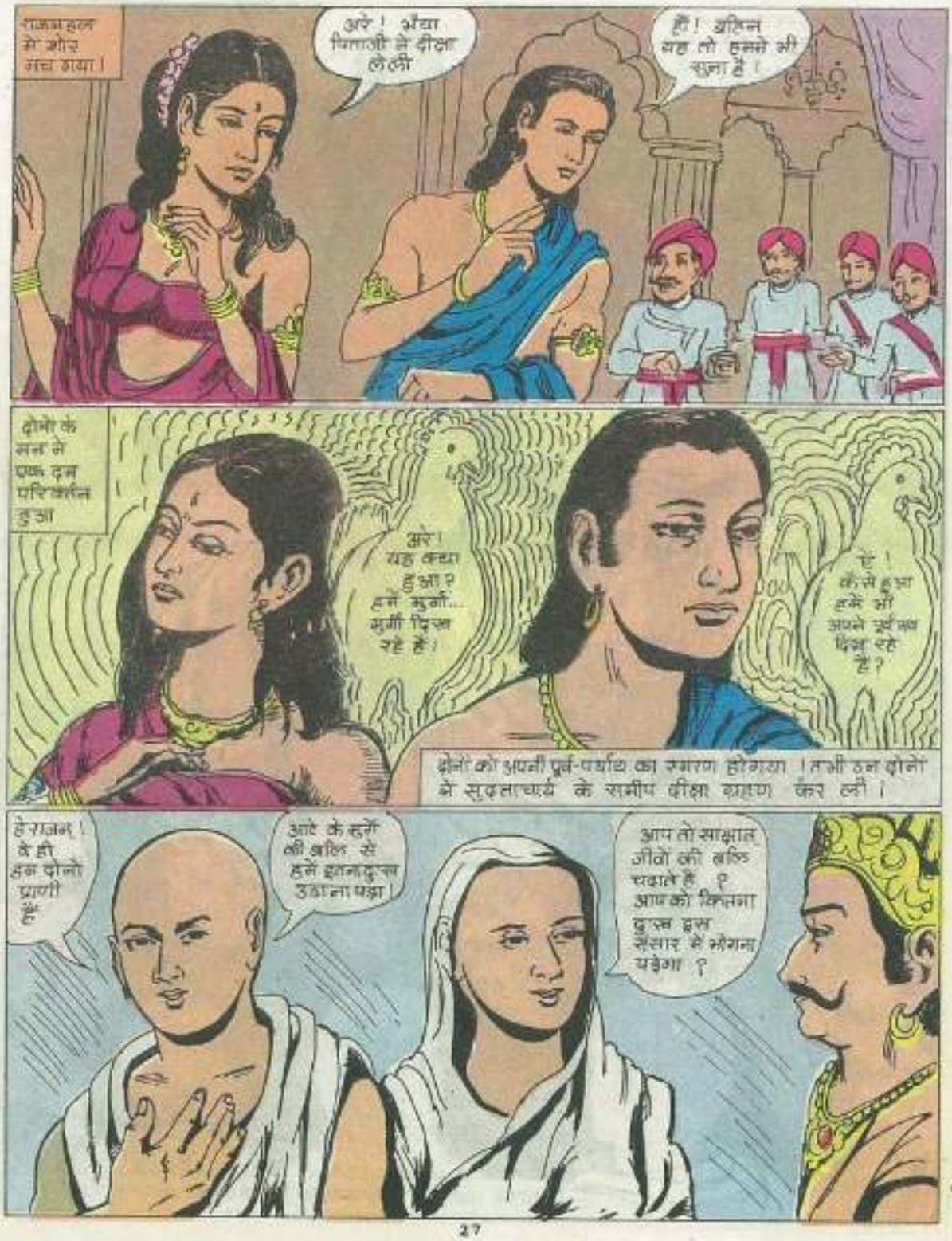

राजमहल में शोर मच गया।
अरे! भैया पिताजी ने दीक्षा ले ली
हाँ! अखिल यह तो हमने भी सुना है!
दोनों के मन में एक दम परिवर्तन हुआ
अरे! यह क्या हुआ? हमें मुर्गा... मुर्गी दिख रहे हैं!
हें! कैसे हुआ हमें भी अपने पूर्व भव दिख रहे हैं?
दोनों को अपनी पूर्व-पर्याय का स्मरण होगया। तभी उन दोनों ने सुदत्ताचार्य के समीप दीक्षा ग्रहण कर ली।
हे राजन्! वे ही हम दोनों प्राणी हैं
आटे के मुर्गे की बलि से हमें इतना दुःख उठाना पड़ा!
आप तो साक्षात् जीवों की बलि चढ़ाते हैं? आपको कितना दुःख इस संसार में भोगना पड़ेगा?

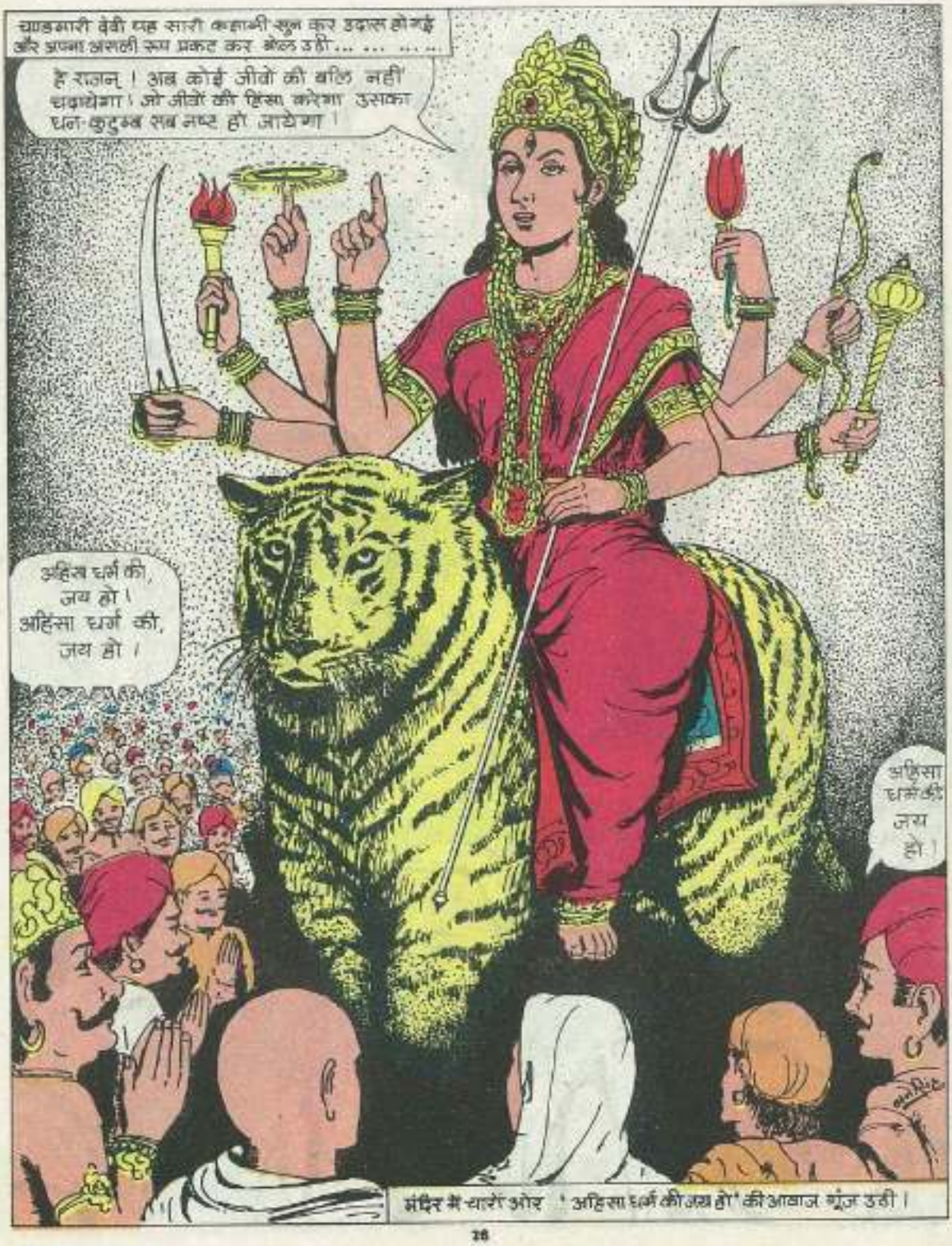
चामुण्डा देवी यह सारी कहानी सुन कर उदास हो गई और अपना असली रूप प्रकट कर बोल उठी... ... ...
हे राजन्! अब कोई जीवों की बलि नहीं चढ़ायेगा। जो जीवों की हिंसा करेगा उसका धन-कुटुम्ब सब नष्ट हो जायेगा।
अहिंसा धर्म की, जय हो। अहिंसा धर्म की, जय हो।
अहिंसा धर्म की जय हो।
मंदिर में चारों ओर 'अहिंसा धर्म की जय हो' की आवाज गूंज उठी।

सौ० प्रेमलता पहाड़िया धर्मपत्नि श्री शिखर चन्द पहाड़िया
जयहिन्द इस्टेट नं. २-ए, दूसरा मंजिल, भूलेश्वर, बम्बई -२

PAHARIA

- PAHARIA SILK MILLS PVT. LTD
- SHIKHARCHAND AMITKUMAR
- PAHARIA INDUSTRIES
- PAHARIA TEXTILES CORPORATION
- PARAS SILK INDUSTRIES
- SAPNA SILK MILLS
- SHIKHARCHAND PREMLATA PAHARIA
- PAHARIA TEXTILES MILLS PVT. LTD
- PAHARIA TEXTILES INDUSTRIES
- PAHARIA UDYOG
- PAHARIA SYNTHETICS
- VARUN ENTERPRISES
- ANAND FABRICS
- PANCHULAL NIRMALDEVI PAHARIA

Kaushal Silk Mills Pvt. Ltd.

FACTORY :
875, KAROLI ROAD, OPP. PAHARIA COMPOUND, BHIWANDI, DIST. THANE.
TEL : 34243 ,22819, 22816
FAX : (02522) 31987

REGD. OFF
JAI HIND ESTATE NO. 2-A, 2ND FLOOR, DR. A.M. ROAD BHULESHWAR,
BOMBAY- 400 002
TEL : 2089251, 2053085 2050996, FAX : 2080231

जैनाचार्यों द्वारा लिखित सत्य कथाओं पर आधारित

जैन चित्र कथा

आठ वर्ष से ८० वर्ष तक के बालकों के लिए

ज्ञान वर्धक, धर्म, संस्कृति एवं इतिहास की जानकारी देने वाली स्वस्थ, सुन्दर, सुरुचिवर्धक, मनोरंजन से परिपूर्ण आगम कथाओं पर आधारित जैन साहित्य प्रकाशन में एक नये युग का प्रारम्भ करने बाली एक मात्र पत्रिका

जैन चित्र कथा

ज्ञान का विकाश करने वाली ज्ञानवर्धक, शिक्षाप्रद और चरित्र निर्माणकारी सरल एवं लोकप्रिय सचित्र कथा जो बालक वृद्ध आदि सभी के लिए उपयोगी अनमोल रत्नों का खजाना, जैन चित्र कथा को आप स्वयं पढे तथा दूसरों को भी पढ़ावे।

विशेष जानकारी के लिए सम्पर्क करें।

आचार्य धर्मश्रुत ग्रन्थ माला

संचालक एवं सम्पादक—धर्मचंद शास्त्री

श्री दिगम्बर जैन मंदिर, गुलाब वाटिका लोनी रोड, जि० गाजियाबाद

फोन 05762-66074